केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
भोपाल संभाग
मैदा मिल के सामने, भोपाल-462 011
दूरभाषकमांक 2550728(D.C.)
2551678 (. स.आ.)
2551699 (प्र.अ./ले.प.एवं ले.अ.)
फैक्सः 0755-2553126
ई-मेलःacbhopal@yahoo.com

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
BHOPAL REGION
Opp. Maida Mills,Bhopal-462011
Phone: 2550728 (DC)
2551678 (ACs)
2551699 (AO/FO)
Fax: 0755-2553126
E.Mail:acbhopal@yahoo.com

फ.140338/केविस/क्षे0कार्या0/भोपाल /2016-17 दिनांक 27.07.2016

प्रिय प्राचार्यगण,

जिदंगी भर हम एक ही भूल करते रहे, धूल चेहरे पर थी हम आईना साफ करते रहे।

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम यह समझ लें कि कार्य कहां, कितना और कैसे किया जाना है। व्यक्ति डाक्टर के पास अपने दर्द का इलाज करवाने आता है । जब तक डाक्टर यह न समझे कि दर्द कहां और कितना है वह सही दवा नहीं दे सकता और व्यक्ति स्वस्थ भी नहीं हो सकता। ठीक इसी प्रकार प्राचार्य जो अपने विद्यालयों के डाक्टर और लीडर है उन्हे प्रत्येक प्रकार की समस्याओं के कारणों को समझकर उचित मात्रा में उपचार देना है जिससे समस्या का अंत हो सके ।

कक्षा X से XII शतप्रतिशत परिणाम एक ऐसा लक्ष्य है जिसे प्राप्त करना प्रत्येक प्राचार्य के अस्तित्व के लिए नितान्त आवश्यक है। उस लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में आने वाली हर बाधा का समाधान आपको ही खोजना है जिसमें निम्नलिखित आजमाये हुए उपाय निश्चित रूप से आपके सहायक होगें।

1. **शैक्षणिक प्रगति की माहवार रिपोर्ट (MRAP)**

प्रत्येक अध्यापक से विषय की कापी एवं अंकों को देखते हुए आपसी संवाद के आधार पर धीमी गति से सीखने वाले बच्चों की सूची तैयार करे । यह कार्य मशीनी नहीं है। अध्यापक एवं बच्चों से सार्थक बातचीत आवश्यक है । चूंकि उन्ही की समस्याओं का समाधान आपको करना है । यह कार्य यदि आप बिना संवाद के करते है तो निरर्थक होगा। वास्तविक समस्या सामने आनी चाहिए तभी उचित समाधान संभव हो सकेगा। असफलता अर्थात प्रकिया व्यर्थ होने का मूल कारण ही यह है कि वास्तविक समस्या का पता नहीं लगता मात्र खानापूर्ति होती रहती है । ऐसा वातावरण निर्मित होना आवश्यक है कि छात्र अपनी समस्या बता सके।

- छात्र की वास्तविक समस्या का ज्ञान होने के पश्चात् उपचार की बारी आती है । छात्र की प्रवृत्तियों, पृष्ठभूमि, लेखन क्षमता आदि के आधार पर छात्र की सहमति से उपचार की विधि का निर्धारण हो । उपचार थोपा गया है ऐसा छात्र को प्रतीत नहीं होना चाहिए। यदि छात्र उपचार की विधि को पंसद करता है और उसे विश्वास है कि यह उसे सफलता की ओर ले जायेगी तो यकीन मानिए ऐसा जरूर होगा। परन्तु यह आपका कार्य है कि छात्र और शिक्षक इस विधि में पूरे मन से सम्मिलित हों। जिन विधालयों ने सफलता प्राप्त की है उनके छात्र, शिक्षक एवं प्राचार्य में एक सामंजस्य था और तीनों एक साथ एक लक्ष्य की ओर अग्रसर थे। प्रत्येक माह के अंत में प्रदर्शन के आधार पर सुधार/उपचार में परिवर्तन किया जा सकता है लेकिन वह परिवर्तन भी थोपा हुआ नहीं होना चाहिए। छात्र एवं शिक्षक की सहमति से होना चाहिए।

- **त्रुटि विश्लेषण(Error Analysis)** – धीमी गति से सीखने वाले छात्र असमंजस की स्थिति में रहते है। उन्हें स्वयं को मालूम नहीं होता कि वह कितना जानते हैं और कितना नहीं समझ पाते। यह एक वैज्ञानिक विधि है जिससे कि पाठ का कौन सा और कितना अंश छात्र नहीं समझ सका शिक्षक को आसानी से समझ में आयेगा। शिक्षक के लिए यह जानना कि कक्षा के धीमी गति से सीखने वाले वाले छात्रों को कौन सा अंश दुबारा समझाना होगा या पूरा पाठ दोहराना होगा या केवल प्रश्न का अर्थ समझाना होगा इत्यादि की जानकारी आसानी से मिल सकती है। यहां प्रश्न यह नहीं है कि अध्यापक कितना ज्ञानी है परंतु यह है कि वह कितनी रूचि से छात्र की समस्याओं को दूर करने का प्रयास कर रहा है। इस प्रयोग में भी आप छात्र को शामिल कर सकते है। उसके सामने ही प्रश्नवार (पूरा सही/आंशिक सही/बिलकुल गलत) का निर्धारण करते हुए उसके सहयोग से कैसे स्थिति बेहतर की जाये के बारे में निर्णय लिया जा सकता है। यदि आप छात्र को प्रक्रिया में सम्मिलित करते हैं तो निश्चित रूप से उसका आत्मविश्वास बढेगा और वह बेहतर प्रदर्शन की ओर अग्रसर होगा।
- **शैक्षणिक दायित्व लेना (Academic Adoption):** किसी भी छात्र की समस्याये शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक, सामजिक एवं भावनात्मक इत्यादि हो सकती है और इन सभी का प्रभाव उसके प्रदर्शन पर पडना अनिवार्य है । अतः जब प्राचार्य के रूप में आप धीमी गति से सीखने वाले छात्र की समस्याओं को दूर करने का बीड़ा उठाते हैं तो उसकी सभी प्रकार की समस्याओं का जानना और विश्लेषण कर दूर करने का प्रयास करना आवश्यक है । इसके लिए इस छात्र की मनः स्थिति को धैर्य पूर्वक समझना होगा। अतिरिक्त समय देना होगा। छात्र को अपनी बात कहने का मौका देना होगा। जिससे कि वह कुंठा की भावना से निकलकर सीखने की प्रक्रिया से जुड़ सके । जिस छात्र का शैक्षणिक दायित्व आप या आपका शिक्षक लेता है उसके पूरे दिन के क्रियाकलापों से आप परिचित हों, दिनचर्या नियमित करने, स्वास्थ्य यदि ठीक नहीं है तो कारण पता लगाने आदि की जिम्मेदारी लेते हुए परिवार के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करते हुए, उसका आत्म विश्वास बढायें तभी उसे वह अनुकूलता मिल सकेगी जिसमें उसका व्यक्तित्व निखरेगा और प्रदर्शन निश्चित रूप से बेहतर होगा।
- शत प्रतिशत परिणाम के उद्देश्य की पूर्ति में उपरोक्त वर्णित तीनों उपाय सहायक होगें बशर्ते आप पूरी तल्लीनता एवं ईमानदारी के साथ, अपने अहम को अलग रखकर छात्र और शिक्षक को साथ लेकर प्रयास करे।

रख हौंसला, वो मंजर भी आयेगा।
प्यासे के आगे समंदर भी आयेगा ।
थक हार कर न बैठ, ऐ मंजिल के मुसाफिर।
मंजिल भी मिलेगी और जीने का मजा भी आयेगा।

डा(श्रीमती) बी कौर
सहायक आयुक्त

प्राचार्यगण
समस्त केन्द्रीय विघालय
भोपाल संभाग